पर्सपेक्टिव: भारत: लोकतंत्र की जननी

प्रिलिम्स के लिये:

भारतीय लोकतंत्र, G20 शिखर सम्मेलन, P20 शिखर सम्मेलन, डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना, SDG

मेन्स के लिये:

भारतीय लोकतंत्र की विश्व के लोकतंत्र से तुलना, भारत में सदियों से लोकतंत्र की निरंतरता

प्रसंग क्या है?

हाल ही में पार्लियामेंट 20 (P20) शिखर सम्मेलन नई दिल्ली में आयोजित किया गया। यह G20 देशों के संसदीय वक्ताओं के नेतृत्व वाला एक सहभागिता समूह है। इसका उद्देश्य **"एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य के लिये संसद" विषय के तहत वैश्विक शासन में संसदीय आयाम लाना है।**

- इस कार्यक्रम में भारत की प्राचीन लोकतांत्रिक परंपराओं और मूल्यों पर प्रकाश डालते हुए **"लोकतंत्र की जननी" नामक एक प्रदर्शनी** शामिल थी। भारत की लोकतांत्रिक विरासत समानता**, समरसता, स्वतंत्रता, स्वीकार्यता और समावेशिता** के महत्त्व पर ज़ोर देती है, जो प्राचीन काल से वर्तमान तक भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहे हैं।

भारत लोकतंत्र की जननी कैसे है?

- **प्राचीन अवधारणा**
    - भारत में लोकतंत्र का एक **लंबा और गहन इतिहास रहा है**। यह इस विचार को रेखांकित करता है कि लोकतांत्रिक सिद्धांत भारतीय उपमहाद्वीप के लिये नए नहीं हैं।
        - **शासक और शासित** के बीच का संबंध पिता और संतान के समान माना गया है।
    - भारतीय लोकतंत्र में **धर्म (कर्त्तव्य)** की अवधारणा महत्त्वपूर्ण है, जिसमें **राजा (राज धर्म)** और **प्रजा (प्रजा धर्म)** दोनों के दायित्व शामिल हैं।
- **बुनियादी मूल्य**
    - भारतीय लोकतंत्र के मूल मूल्य जैसे- समरसता**, स्वतंत्रता, स्वीकार्यता, समानता और समावेशिता** नागरिकों के गरिमापूर्ण जीवन को रेखांकित करते हैं;
    - **समावेशी निर्णय-प्रक्रिया** के साथ लोकतांत्रिक पारिवारिक संरचनाओं का पारिवारिक महत्त्व देखा जाता है; सभाओं में**महिलाओं की भागीदारी** प्रारंभिक लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में समावेशिता को दर्शाती है।
    - भारत की लोकतांत्रिक नींव, जो इतिहास और सामाजिक मूल्यों में निहित है, **धर्म द्वारा निर्देशित स्थायी लोकतांत्रिक सिद्धांतों** पर ज़ोर देती है, यह शासकों तथा शासितों दोनों की भूमिकाओं को आकार देती है;
    - **सहभागी लोकतंत्र** की ऐतिहासिक परंपरा शासकों के चयन और अनुमोदन में **जनता की भागीदारी** को रेखांकित करती है, शासक की संभावना तथा सार्वजनिक सहमति के महत्त्व को उजागर करती है, व्यक्तियों का कल्याण सुनिश्चित करने वाले के रूप में एक देखभाल करने वाले पिता को प्रतिबिंबित करती है।
- **लोकतंत्र का दार्शनिक आधार**
    - **लोकतांत्रिक-आध्यात्मिक-सामाजिक लोकाचार:** प्राचीन भारतीय धर्मग्रंथ, ऋग्वेद में कहा गया है: एकम् सद विप्रा बहुधा वदन्ति- **"सर्वोच्च वास्तविकता एक है, ऋषि उसे विभिन्न नामों से बुलाते हैं।"**
    - “समानता **लोकतंत्र** की आत्मा है। भारत के दार्शनिकों, संतों और कवियों ने इसे पहचाना तथा सदियों से इसके महत्त्व का प्रचार किया।

प्राचीन काल से लोकतांत्रिक संस्थाएँ किस प्रकार विकसित हुई हैं?

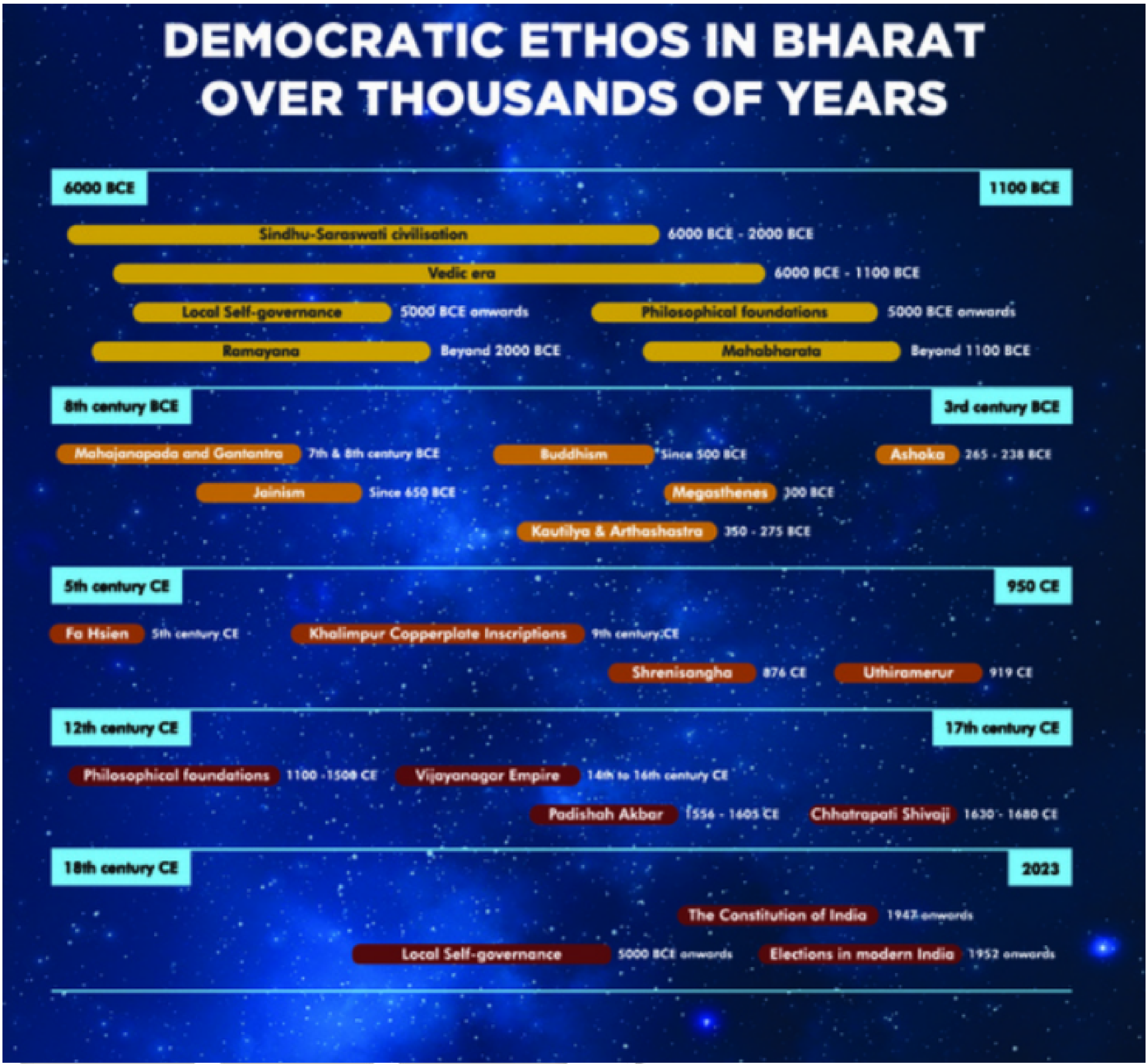

//

- **वैदिक युग में सार्वजनिक भागीदारी (6000 ईसा पूर्व - 1100 ईसा पूर्व)**
  - चार वेद (ऋग्वेद, अथर्ववेद, सामवेद और यजुर्वेद) राजनीतिक, सामाजिक तथा शैक्षिक सिद्धांतों सहित एक व्यापक **सभ्यतागत मूल्य प्रणाली** को समाहित करते हैं।
  - **विश्व की सबसे पुरानी रचना ऋग्वेद और अथर्ववेद** में सभा, समिति तथा संसद जैसे प्रतिनिधि निकायों का उल्लेख है, ये शब्द आज भी उपयोग में हैं।
- **महाकाव्यों में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था**
  - रामायण व्यक्तियों के कल्याण के लिये शासन पर ज़ोर देती है, जैसा कि राम के सर्वसम्मति से अयोध्या के राजा के रूप में चयन में देखा गया था।
  - **महाभारत** में धर्म, आचार, नैतिकता और शासन पर प्रकाश डाला गया है, विशेष रूप से युद्ध के मैदान में **युधिष्ठिर को भीष्म की सलाह,** भगवद् गीता में कर्त्तव्यों पर मार्गदर्शन प्रदान किया गया है।
- **महाजनपद और गणतंत्र (7वीं तथा 8वीं शताब्दी ईसा पूर्व)**
  - व्यक्तियों का **सामूहिक शासन**, प्राचीन भारतीय प्रणालियों में एक प्रमुख विशेषता, **महाजनपद शासन मॉडल में** प्रकट हुआ: एक परिषद के साथ 15 राजत्व और 10 गणराज्य जहाँ प्रमुख चुना जाता था।
  - अष्टाध्यायी जैसे ग्रंथ **'लोकतांत्रिक' संस्थाओं**- गण, पूग, निगम, जनपद पर प्रकाश डालते हैं।

- **जैन धर्म**
  - 7वीं शताब्दी ईसा पूर्व से चला आ रहा जैन धर्म, अनेकांतवाद के माध्यम से बहुलवाद को बढ़ावा देता है, यह स्वीकार करते हुए कि सत्य के कई पहलू होते हैं। यह लोकतांत्रिक सिद्धांतों के अनुरूप सह-अस्तित्व और सहिष्णुता को बढ़ावा देता है।
  - **मूल सिद्धांत के रूप में अहिंसा के साथ** जैन धर्म **शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व** का समर्थन करता है, जिसका आज भी भारत में पालन किया जाता है।
- **बौद्ध धर्म (500 ईसा पूर्व से)**
  - 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में गौतम बुद्ध द्वारा स्थापित **बौद्ध संघ,** प्रारंभिक **लोकतांत्रिक प्रथाओं** का उदाहरण था। इस भिक्षु समुदाय ने बौद्ध सिद्धांतों और **लोकतांत्रिक परंपराओं** को बरकरार रखा, नेताओं के लिये खुली चर्चा तथा चुनाव को बढ़ावा दिया। बौद्ध सिद्धांत भारत में लोकतांत्रिक मूल्यों को आकार देते रहे हैं।
- **जन नेता**
  - प्रारंभिक भारत ने अराजकता की स्थिति में एक **महासम्मत** (महान निर्वाचित) का चुनाव करते हुए **सहभागी शासन** को अपनाया। एक बड़े हॉल में व्यक्तियों द्वारा चुना गया राजा, गणराज्य या व्यक्तियों के राज्य में उनकी सुरक्षा हेतु **'वासेट्ठ' (प्रमुख)** के रूप में शासन करता था।
  - बौद्ध धर्म के लोकतांत्रिक सिद्धांतों ने **शासकों को प्रभावित किया,** जिससे राज्यों में लोकतांत्रिक मूल्यों को अपनाना सुनिश्चित हुआ। शिलालेखों में समृद्धि और गिरावट की रोकथाम के लिये नियमित चुनाव का आग्रह किया गया।
- **कौटिल्य और अर्थशास्त्र (350 - 275 ईसा पूर्व)**
  - लोकतंत्र नागरिकों को प्राथमिकता देता है, जैसा कि **चंद्रगुप्त मौर्य के सलाहकार** कौटिल्य द्वारा तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के शासन ग्रंथ अर्थशास्त्र में ज़ोर दिया गया है।
  - यह दावा करता है कि शासक की खुशी और कल्याण व्यक्तियों की भलाई पर निर्भर करता है, जो भारत के सेवा करने के स्थायी लोकतांत्रिक सिद्धांत का प्रतीक है, न कि शासन करने का।
- **मेगस्थनीज़ और डायोडोरस सिकुलस के रिकॉर्ड (300 ईसा पूर्व)**
  - प्राचीन यूनानियों ने विभिन्न राज्यों में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था का उल्लेख किया। भारतीयों की एक सराहनीय प्रथा थी: किसी को भी गुलाम नहीं बनाना, समान स्वतंत्रता सुनिश्चित करना। वैश्विक गुलामी 150 वर्ष पहले समाप्त हो गई, सच्चा लोकतंत्र इसे बाहर रखता है। लेकिन भारत ने कभी गुलामी नहीं अपनाई थी।
- **अशोक का शासन काल (265 - 238 ईसा पूर्व)**
  - एक राज्य लोकतंत्र का प्रतीक है जब कानून द्वारा संरक्षित समान अधिकार और सम्मान, व्यक्तियों का कल्याण सुनिश्चित करते हैं।
  - सम्राट अशोक ने कलिंग की जीत के बाद ऐसे शासन की स्थापना की, जो प्रत्येक पाँच वर्ष में व्यवस्थित मंत्रिस्तरीय चुनावों के माध्यम से **शांति और कल्याण को बढ़ावा देता था।** उनके आदर्श लोकतंत्र के प्रतीक भारत के राष्ट्रीय प्रतीक में अंकित हैं।
- **फाह्यान के अभिलेख (5वीं शताब्दी ई.पू.)**
  - लोकतंत्र अधिकारियों को लोगों की सेवा करने का अधिकार देता है, फाह्यान ने लोगों,**कानून के शासन और सार्वजनिक कल्याण के प्रति** भारतीय सम्मान का पालन किया।
- **खलीमपुर ताम्रपत्र (9वीं शताब्दी ई.)**
  - गोपाल को लोगों ने एक अयोग्य शासक को प्रतिस्थापित करने के लिये चुना था। खलीमपुर ताम्रपत्र अव्यवस्था के अंत और न्याय के सिद्धांत पर प्रकाश डालते हैं।
- **श्रेणिसिंघा प्रणाली (876 ई.)**
  - भारत में लोकतांत्रिक प्रशासन में गिल्ड और शहर के नेताओं सहित **जवाबदेह प्रशासनिक अधिकारियों का चुनाव करना** तथा उन्हें रखना शामिल है।
- **उथिरामेरुर शिलालेख (919 ई.)**
  - दक्षिण भारत के **उथिरामेरुर मंदिर** में शासक परांतक चोल प्रथम के शिलालेख एक हज़ार साल पहले के लोकतांत्रिक चुनावों और स्थानीय स्वशासन की पुष्टि करते हैं।
- **विजय नगर साम्राज्य का शासन**
  - **सर्व-सम्मति** लोकतांत्रिक आधार है, जिसका उदाहरण दक्षिण भारत में विजयनगर है, जहाँ **कृष्णदेव राय** के सहभागी शासन, **मंडलम, नाडु और स्थल** में विभाजन, ग्रामीण स्तर पर स्वशासन पर ज़ोर दिया गया था, जो लोगों के लाभ के लिये एक आदर्श राज्य था।
- **पदीशाह अकबर (1556 – 1605 ई.)**
  - पदीशाह अकबर (1556 - 1605 ई.) ने धार्मिक भेदभाव से निपटने के लिये **"सुलह-ए-कुल"** की शुरुआत करते हुए **समावेशी शासन** का अभ्यास किया।
  - उन्होंने समधर्मी धर्म **"दीन-ए-इलाही"** और **'इबादत खाना'** के साथ सद्भाव को बढ़ावा दिया। नवरत्न परामर्शदाताओं ने अकबर के उन्नत लोकतांत्रिक आदर्शों को प्रदर्शित करते हुए जन-समर्थक पहलों में सहायता की।
- **छत्रपति शिवाजी (1630-1680 ई.)**
  - मराठा साम्राज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी (1630-1680 ई.) ने **लोकतांत्रिक शासन** का समर्थन किया। उनके **आज्ञा पत्र** में अष्ट-प्रधान के लिये कर्त्तव्यों की रूपरेखा दी गई, समान अधिकार सुनिश्चित किये गए। शिवाजी की लोकतंत्र विरासत उनके उत्तराधिकारियों के माध्यम से कायम रही।
- **भारत का संविधान (1947 से आगे)**
  - डॉ. भीमराव अंबेडकर के नेतृत्व वाली विविध संविधान सभा द्वारा तैयार किया गया भारत का संविधान एक **आधुनिक, लोकतांत्रिक गणराज्य** की स्थापना करता है।
  - यह समानता और **सार्वभौमिक मताधिकार सुनिश्चित** करते हुए विधायिका, न्यायपालिका **और** कार्यपालिका की शक्तियों तथा संबंधों को रेखांकित करता है।
  - संविधान कई संशोधनों के साथ लोगों के साथ तालमेल बिठाने के लिये विकसित हुआ है, जिसमें संघ, राज्यों और स्थानीय स्वशासन की त्रि-स्तरीय प्रणाली का समावेशन शामिल है।

- **आधुनिक भारत में चुनाव (1952 से आगे)**
    - भारत, **वैश्विक लोकतंत्र का एक स्तंभ, आज़ादी के बाद से 17 राष्ट्रीय चुनाव, 400 से अधिक राज्य चुनाव** और दस लाख से अधिक स्थानीय स्व-सरकारी चुनावों का अनुभव कर चुका है।
    - **निर्वाचन आयोग,** राष्ट्रपति को रिपोर्ट करने वाला एक स्वतंत्र निकाय है, जो सत्ता के शांतिपूर्ण हस्तांतरण को सुनिश्चित करता है तथा शासन के सभी स्तरों पर भारत के गहरे लोकतांत्रिक लोकाचार को दर्शाता है।

वे कौन से स्रोत हैं जो भारतीय लोकतंत्र को फिर से खोजने में मदद करते हैं?

- **समृद्ध साहित्यिक विरासत: भारत के महाकाव्य महाभारत** और रामायण, ज्ञान के स्थायी स्रोतों के रूप में कार्य करते हुए भारतीय संस्कृति में लोकतंत्र और धर्म की अवधारणाओं को बहुत प्रभावित करते हैं।
- **लोकतांत्रिक मूल्य:** भारत के लोकतांत्रिक सिद्धांत पूरे इतिहास में चुनौतीपूर्ण समय में भी कायम रहे हैं।**पश्चिमी और पारंपरिक दोनों मूल्यों के प्रभाव** ने आधुनिक भारतीय लोकतांत्रिक प्रणाली में योगदान दिया है।
- **मूल्यों की निरंतरता:** ऐतिहासिक चुनौतियों के बावजूद भारत ने अपनी लोकतांत्रिक भावना को बरकरार रखा है और यह भावना संविधान एवं **शासन प्रथाओं** सहित इसकी **लोकतांत्रिक संरचनाओं** में परिलक्षित होती है।

लोकतंत्र की जननी के रूप में भारत क्या भूमिका निभा सकता है?

- **मूल्यों का पोषण:**
    - भारत अपनी विविध सांस्कृतिक विरासत के माध्यम से **मौलिक मूल्यों का पोषण करते हुए "लोकतंत्र की जननी"** के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्यों से प्रभावित देश का समृद्ध इतिहास **लोकतांत्रिक सिद्धांतों तथा स्थायी नैतिक मूल्यों के संवर्द्धन में योगदान** देता है।
- **जन जागरूकता:**
    - भारत जन जागरूकता को बढ़ावा देकर "लोकतंत्र की जननी" के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। एक समृद्ध **लोकतांत्रिक विरासत के साथ राष्ट्र अपने नागरिकों के बीच जुड़ाव, राजनीतिक भागीदारी और लोकतांत्रिक सिद्धांतों की गहरी समझ** को बढ़ावा देने के लिये एक प्रकाश स्तंभ के रूप में कार्य करता है।
- **आधुनिक शिक्षा:**
    - भारत, आधुनिक शिक्षा में लोकतंत्र की जननी के रूप में एक मज़बूत लोकतांत्रिक नींव के साथ पीढ़ियों को आकार देते हुए **महत्त्वपूर्ण विचार, समावेशिता और नागरिक जुड़ाव को बढ़ावा देने वाले पाठ्यक्रम के माध्यम से लोकतांत्रिक सिद्धांतों को बढ़ावा** देता है।
- **G20 जैसे मंचों पर वैश्विक नेतृत्व**
    - **भारत की प्रतिबद्धता आर्थिक स्थिरता और सतत् विकास के G20** लक्ष्यों के अनुरूप है। कुछ वैश्विक अभिकर्त्ताओं के विपरीत भारत का लोकतांत्रिक लोकाचार खुला संवाद, मानवाधिकार और समावेशी नीतियों का समर्थन करता है।
    - **भारत विकासशील देशों की आवाज़ को बुलंद करता है,** निर्णय लेने में **न्यायसंगत प्रतिनिधित्व और विविध दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है**। भारत लोकतांत्रिक मूल्यों के वैश्विक महत्त्व को रेखांकित करता है, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और समझ के लिये चर्चाओं एवं नीतियों को आकार देता है।
- **भारत का नेतृत्व**
    - भारत की **G20 की अध्यक्षता लोकतांत्रिक मूल्यों और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के प्रति** उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। देश का लक्ष्य उदाहरण के तौर पर नेतृत्व करना और वैश्विक लोकतांत्रिक सिद्धांतों को बढ़ावा देना है।
- **सामूहिक शक्ति**
    - भारत की प्रगति और **दृष्टिकोण इसके लोगों की सामूहिक शक्ति पर** आधारित है। चुनौतियों पर काबू पाने और **राष्ट्रीय एवं वैश्विक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये सहयोग, सर्वसम्मति और एकता** की शक्ति पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

निष्कर्ष

नई दिल्ली में संसद 20 (Parliament-20) **शिखर सम्मेलन ने विश्व के सामने भारत की समृद्ध लोकतांत्रिक विरासत** और मूल्यों को प्रदर्शित किया। **समावेशिता, समानता तथा सद्भाव पर ज़ोर भारतीय लोकतंत्र का केंद्र है।**

G20 में भारत की भूमिका **लोकतांत्रिक सिद्धांतों के प्रति उसकी प्रतिबद्धता** और वैश्विक चुनौतियों से निपटने व अपने लोगों की **सामूहिक ताकत में उसके विश्वास को दर्शाती है**। देश शिक्षा तथा जन जागरूकता पहल के माध्यम से भावी पीढ़ियों को इन **शाश्वत लोकतांत्रिक मूल्यों को अपनाने हेतु प्रेरित करने के लिये** काम कर रहा है।

सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. निम्नलिखित में से कौन-सा कारक किसी उदार लोकतंत्र में स्वतंत्रता की सर्वोत्तम सुरक्षा को नियत करता है? (2021)

(a) एक प्रतिबद्ध न्यायपालिका

(b) शक्तियों का केंद्रीकरण
(c) नर्िवाचति सरकार
(d) शक्तियों का पृथक्करण

?????:

प्रश्न: भारत की प्राचीन सभ्यता मस्रि, मेसोपोटामयिा और ग्रीस की सभ्यताओं से इस बात में भन्नि है कभिारतीय उपमहाद्वीप की परंपराएँ आज भंग हुए बनिा परिरक्षति की गई है। टप्पिणी कीजयि। (2015)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/perspective-bharat-the-mother-of-democracy